लोरिक-चन्दा पर आधारित लोकाख्यान संगोष्ठी का विवरण
(4-5 जनवरी, 2011)

इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी शास्त्रीय एवं लोकाधारित सौन्दर्यशास्त्र, सम्बद्धशास्त्र एवं परम्पराओं का एक उच्च अनुशीलन केन्द्र है। इस संस्था ने अपने बहु-आयामी कार्यक्रमों के अन्तर्गत 'लोकाख्यान' कार्यक्रम में विगत 4 एवं 5 जनवरी, 2011 को पार्श्वनाथ जैन विद्यापीठ, करौंदी, वाराणसी में लोरिकी एवं चन्दैनी पर आधारित एक द्विदिवसीय व्याख्यान तथा गायन संगोष्ठी का आयोजन किया जिसमें पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रतिष्ठित गायकवृन्द एवं लोककला व लोकसाहित्य के मूर्धन्य विद्वान् भारत के विभिन्न प्रान्तों से पधाकर अपने महत्त्वपूर्ण योगदान से उन्होंने संगोष्ठी को सफल बनाया।

कार्यक्रम का शुभारंभ 4 जनवरी को सुबह 11 बजे पार्श्वनाथ विद्यापीठ के सभागृह में हुआ, जहां मुख्य अतिथि के रूप में प्रो0 सदानन्द शाही, निदेशक, भोजपुरी उच्च अध्ययन केन्द्र, बी.एच.यू. पधारे और प्रो0 सुदर्शन लाल जैन, निदेशक, पार्श्वनाथ जैन विद्यापीठ ने अध्यक्ष पद अलंकृत किया। डा. मन्नू यादव की सरस्वती वन्दना से अनुष्ठान प्रारम्भ हुआ। मान्य अतिथियों से दीप प्रज्ज्वलन एवं देवचित्र पर माल्यार्पण के बाद संस्था के परामर्शदाता प्रो0 कमलेशदत्त त्रिपाठी ने व्याख्यानकर्ताओं को सम्मानित किया। अपने स्वागत भाषण में प्रो0 त्रिपाठी ने व्याख्यान-संगोष्ठी के विषय का प्रवर्तन करते हुए लोक संस्कृति के सिकुड़ते दायरे के संकट पर उपस्थित विद्वत् समाज का ध्यान आकृष्ट किया तथा अपनी संस्था द्वारा किये जा रहे कार्यों पर प्रकाश डाला और लोकाख्यान परंपरा को सुरक्षित रखने के लिये गोष्ठियों के आयोजनों की शृंखला का परिचय दिया।

व्याख्यान सत्र के प्रथम अधिवेशन में चार वक्ता श्री मंगलदेव कवि, श्री विष्णु कवि, श्री महेन्द्र नाथ यादव एवं डा0 ओम प्रकाश भारती ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये। प्रथम वक्ता श्री मंगलदेव कवि ने अपने शोधपत्र में चन्दा-लोरिक आख्यान काव्य का सम्यक् परिचय दिये। इस आख्यान काव्य के प्रचलित भिन्न-भिन्न नाम, एवं विभिन्न पात्रों के परिचय देते हुए उन्होंने इस गाथा के गायन के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला, साथ ही साथ गोपाल आर्यक व लोरिक एवं श्यामरूप उर्फ सांवरु के बहादुरी, उनके द्वारा भ्रष्टाचार एवं अत्याचार के दमन, उन लोगों की उदार मानसिकता एवं प्रेमिक चित्त पर भी चर्चा की।

दूसरे वक्ता श्री महेन्द्र नाथ यादव ने अपने भाषण में बताया कि बड़े लम्बे समय से यह आख्यान पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोकमुखों में प्रवाहित होने के कारण इसमें आ गई अतिरंजना को अस्वीकार नहीं किया जा सकता पर उसकी ऐतिहासिकता को भी सम्पूर्ण रूप से खारिज नहीं किया जा सकता। कथावस्तु को प्रस्तुत करते हुए प्रधान पात्रद्वय लोरिक तथा साँवरु कैसे सामन्ततान्त्रिक अत्याचारी शासक का दमन करके लोकतन्त्र की मर्यादा का पालन करते हैं एवं समाज को न्याय दिलाते हैं, इसकी विशद चर्चा की।

डा0 ओम प्रकाश भारती के गवेषणात्मक प्रपत्र का विषय था "लोकमहाकाव्य लोरिकायन : परम्परा, स्वरूप और महत्ता"। अपने दीर्घ भाषण में डा. भारती ने इस लोक महाकाव्य का मैथिली एवं मगधी संस्करण के विशेष सन्दर्भ में कथानक के परंपरा एवं विस्तार क्षेत्र, देश, काल एवं इस आख्यान पर अब तक हुए महत्वपूर्ण शोधकार्य, विषयवस्तु, ऐतिहासिक साक्ष्य एवं सन्दर्भ, सामाजिक पृष्ठभूमि तथा उसकी महत्ता पर अपना गंभीर विचार व्यक्त किया।

भोजपुरी अध्ययन केन्द्र के निदेशक प्रो0 सदानन्द शाही ने संगोष्ठी के मुख्य अतिथि के पद से बोलते हुए बताया कि लोकगाथाओं की परम्परा किसी व्यक्ति विशेष द्वारा रची गई परम्परा नहीं होती। क्षेत्रीय एवं भाषागत सीमाओं को पार कर सामूहिक रूप से सर्वभारतीय समाज का चित्रण इसमें हुआ है। इस देश की वनस्पति, नदियां, सरोवर, सागर और इस मिट्टी के प्रेम एवं शौर्य की धारा के सभी रूप यहां प्रतिबिम्बित होते हैं। इसमें भूमि की सभी विशेषताएं प्रतिफलित होती है। यह पुनः पुनः नवीन होती पुनर्नवा परम्परा है। लोकगाथाओं की इसी पुनर्नवा परम्परा को पहचानना जरूरी है। जैन विद्यापीठ के निदेशक प्रो0 एस. एल. जैन ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए लोकसाहित्य, लोककला एवं लोक-संस्कृति के साथ अपने को जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि वैश्वीकरण के दौर से होने वाले विनाश से लोक संस्कृति और जाति को हमें बचाना चाहिए। व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र का समापन डा0 प्रणति घोषाल के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।?

कार्यक्रम के उत्तरार्ध में डा0 मन्नू यादव के कुशल संचालन में वाराणसी के श्री चन्द्रमा यादव, जौनपुर के श्री उदय राज, चन्दौली के श्री मंगल कवि एवं छोटे लाल यादव और नौगढ़ के श्री रामजनम निषाद ने अपने साथियों के साथ लोरिक चन्दा एवं लोरिक मंजरी लोकगाथा के विभिन्न प्रसंगों की हृदयग्राही प्रस्तुति की। वाराणसी के वरिष्ठ गायक श्री पारस नाथ यादव ने बिरहा के मनोहर शास्त्रीय पक्ष की प्रस्तुति की।

दूसरे दिन सुबह व्याख्यान कार्यक्रम में श्री राम प्रसाद, डा0 सोमनाथ यादव, श्री अमरदेव कवि एवं डा. अर्जुनदास केशरी आदि चार वक्ताओं ने अपने शोध निबन्ध प्रस्तुत किया।

पहले वक्ता श्री रामप्रसाद ने अपने शोधपत्र "सामाजिक समरसता का महाकाव्य लोरिकायन" में कहानी को संक्षेप में बताते हुए कथानक के पात्रों का परिचय, उनके काल एवं भौगोलिकता और कहानी के सामाजिक पृष्ठभूमि पर चर्चा की। यद्यपि लोरिक देव की समय सीमा पर साहित्यकार एवं इतिहासकार भी सुनिश्चित कुछ नहीं बताते, फिर भी आनुमानिक तौर पर बारहवीं शती को लोरिक का समय माना जा सकता है। इसके अतिरिक्त लोरिकी-गायनशैली पर भी विद्वान् वक्ता ने प्रकाश डाला।

परवर्ती वक्ता डा0 सोमनाथ यादव ने "छत्तीसगढ़ की लोकगाथा-लोरिकचन्दा" पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। अपने भाषण में विद्वान वक्ता ने इस आख्यान काव्य के निर्माण-काल, उसकी भौगोलिकता, ऐतिहासिकता एवं लोरिक-चन्दा के प्रसंग पर विचार व्यक्त किया। तत्पश्चात् इस गाथा के गायकवृन्द एवं कथानक के रचनाशैली पर भी पुंखानुपुंख विचार किया।

व्याख्यान सत्र के अन्तिम वक्ता डा0 अर्जुन दास केशरी ने "भोजपुरी लोकगाथा लोरिकायन की प्रासंगिकता" पर अपना शोध निबन्ध प्रस्तुत किया। डा. केशरी ने अपने भाषण में लोरिकायन के रचना काल एवं उस पर किये गये समालोचकों के अभिमत पर सविस्तार चर्चा की। तत्पश्चात् कथानक की रचनाशैली पर विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने लोरिकायन के कथा को तीन भागों में विनियोजित किया- 1. मुख्य कथा, 2. गौण कथाएं एवं 3. अवान्तर कथा प्रसंग। इन तीनों को मिलाकर पुनः उन्होंने भिन्न-भिन्न तीन भागों में रचना को विभाजित किया : 1. कथापीठिका, 2. कथाविस्तार एवं 3. कथोपसंहार और इसी आधार पर सम्पूर्ण कथावस्तु का पुंखानुपुंख विश्लेषण किया।

दूसरे व्याख्यान सत्र की अध्यक्षता करते हुए डा0 संजय कुमार, प्राध्यापक अंग्रेजी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने शास्त्रीय अनुशासन एवं लोकविद्या के समन्वय की आवश्यकता पर अपना विचार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि यह इस समय की विडम्बना है कि लोकविद्याओं को पूरी तरह से खारिज करने का प्रयत्न किया गया है जब कि आज आवश्यकता है कि लोकविद्या और औपचारिक अनुशासन को समन्वित किया जाय। लोकविद्या को प्राप्त करने वाले भी उसी तरह विद्वान् हैं जैसे कि अन्य अनुशासन के, क्योंकि केवल किताबी ज्ञान ही ज्ञान नहीं। ज्ञान के जीवन

में उतरने पर ही उसे ज्ञान कहा जा सकता है। उन्होंने कहा कि लोकविद्या और लोककला ही हमारी अपनी विरासत और ताकत है और वह आज भी प्रासंगिक है। हमलोग जनपदों की संस्कृति में जीते हैं। जब तक वह जीवन से अलग नहीं, तब तक वह सुरक्षित है। अन्त में डा0 कमलेशदत्त त्रिपाठी के धन्यवाद ज्ञापन से सत्र की समाप्ति हुई। दोनों दिन व्याख्यान सत्रों का संचालन डा0 प्रणति घोषाल द्वारा किया गया।

अपराह्न में मिर्जापुर से आये श्री कल्लू यादव ने चन्दैनी आख्यान की वाचनात्मक शुद्ध परम्परा को प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् श्री वल्ली यादव, सोनभद, श्री दीपक सिंह एवं श्री मन्नालाल जवाहरलाल, वाराणसी ने लोरिकी आख्यान को बिरहा की शैली से समरस परम्परा की गायनात्मक मधुर एवं ओजस्वी दोनों ही शैलियों में प्रस्तुत किया। इसके बाद इन्दिरा संगीत कला विश्वविद्यालय, खैरागढ़ से आये श्री लतमार दास एवं विलासपुर के वरिष्ठ कलाकार श्री राम अधार साहू ने छत्तीसगढ़ में प्रचलित लोरिक-चन्दा आख्यान को नृत्य और गान की मिश्रित शैली में प्रस्तुति की जिसने अद्भुत वनवासी परम्परा का दर्शन कराया, जिसको दर्शक समाज ने भी खूब सराहा। गायन प्रस्तुति के इस सत्र का संचालन डा0 मन्नू यादव ने किया। अन्त में प्रो0 कमलेशदत्त त्रिपाठी के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

- प्रणति घोषाल